International Journal of Advanced Education and Research
www.alleducationjournal.com
ISSN: 2455-5746
Received: 16-06-2021, Accepted: 02-07-2021, Published: 17-07-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 20-21

स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं धार्मिक विचारों की वर्तमान शिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ. पूनम मदान[1], ज्योति सचान[2]
[1] प्रधानाचार्या, डा. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेसनल स्टडीज्, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्रा, हिमालयन विश्वविद्यालय, अरूणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
सत्य अहिंसा, दया, अपरिग्रह, एकता, प्रेम, सहानुभूति तथा तप आदि ऐसे जीवन मूल्य है जो भारतीय शिक्षा को सांस्कृतिक विरासत में प्राप्त हुए है स्वामी विवेकानन्द ने इन सबको जीवन मूल्यों के रूप में ग्रहण कर जिस शिक्षा दर्शन का प्रतिपादन किया है वह भारतीय शिक्षा दर्शन के अमूल्य निधि तथा मुकुटमणि है विश्व के किसी भी शैक्षिक दर्शन में इस प्रकार की एकता दृष्टिगोचर नहीं होती है फलस्वरूप अन्य किसी भी दर्शन में यह क्षमता नहीं है कि व्यक्ति के व्यक्तिगत सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक आदि विकास को इतनी यथार्थता से सुनिश्चत कर सके।

मूल शब्दः प्रतिपादन, आध्यात्मिक, चारित्रिक, यथार्थता, मुकुटमणि, दृष्टिगोचर।

प्रस्तावना
वर्तमान वैश्विक समाज में व्याप्त अनीति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अन्तवैयक्तिक संबंधें में निगरावट मानवीय मूल्यों का हृास आदि विशालकाय समस्याएं अपने स्वरूपजन्य एवं प्रकृति तन्य विशेषताओं के कारण समाज के मूलभूत संरचना एवं प्रक्रियाओं को पूरी तरह से प्रभावित कर रहे है। जिसके लिए बहुत जिम्मेदारी शिक्षा को उठानी पड़ेगी। मात्र शिक्षा के उद्छेश्यों एवं मूल्यों में ही यथोचित् परिवर्तन कर देने से सुधार की अपार सम्भावनाओं में से अधिकांश की प्राप्ति संभव हो जायेगी। इस दृष्टिकोण से जब हम स्वामी विवेकानन्द नव्य वेदान्त दर्शन एवं धार्मिक विचारों की तरफ देखतें है तो हमें पथ प्रदर्शित करने वाले मूलभू विचार एवं समाज के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक आत्मबल प्राप्त होता है।
मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी होने के कारण अपने जीवन का अस्तित्व बनाये दखने और उसे निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखने हेतु सभ्यता के आदिकाल से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड़, उसके निर्माता और स्वयं के जीवन स्वरूप, समस्याओं रहस्यों एवं लक्ष्यों पर अनवरत चिंतन करता रहा है चिंतन के परिणाम स्वरूप इनके संबंध से उसे जो तथ्य, निष्कर्ष विश्वास एवं सत्य प्राप्त हुये उन्हें शिक्षा का अभ्युदय हुआ जो सदैव से मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। विस्तृत अर्थ में शिक्षा बालक के जन्म से ही आरम्भ हो जाती है तथा उसके समस्त जीवन तक चलती रहती है यह शिक्षा केवल उत्ै तक सीमति नहीं है उसके व्यक्ति के सभी पहलुओं का विकास होता है इस दृष्टिकोण से शिक्षा स्कूल, शिक्षण तथा प्रशिक्षण तक ही सीमित नहीं है बल्कि बालक जीवन के समूचे अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करता है चाहे वे अनुभव स्कूल के अन्दर हो या स्कूल के बाहर। स्कूल में यह शिक्षा कथा–कक्ष तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि पुस्तकालय, प्रयोगशाला और खेल का मैदान भी इसमें आते है।

महत्व
स्वामी विवेकानन्द कट्टर वेदान्ती थे। वे वेदों और उपनिषदों द्वारा निर्देशित ज्ञान पर पूरी आस्था रखते थे। उन्होंने वेदान्त दर्शन को व्यवहारिक रूप दिया। उनका विश्वास था कि धर्म केवल पूजा–पाठ से सम्भव नहीं होता वरन् मनुष्यत्व एवं सत्यनिष्ठता से ही सम्भव होता है। ईश्वर से मिलने के लिये मन्दिर, मस्जिद जाना ही जरूरी नहीं है, वरन् कृषि क्षेत्र तक वो सभी सिल जहाँ निष्काम कर्म द्वारा मानव की सेवा की जाती है। सैकड़ों वर्ष तक पराधीन रहने के बाद की कथा है। पराजित–जाति–सुलभ कई दोष भारतीय जीवन की रंग–रंग में घुस गए थे। फिर भी भारतीय संस्कृति अपने पुण्य–प्रताप एवं ईश्वर की कृपा से पूर्णतः विलुप्त नहीं हुई। यद्यपि इसके प्रसार और गांभीर्य ने क्रमशः सिंकुड़–सिमट कर तथा विनष्ट होकर एक विकट परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी, तथापि सैकड़ों प्रतिकूल अवस्थाओं के बींच भी यह अपनी रक्षा करने में समर्थ सिद्ध हुई थी। एक के बाद एक अत्यन्त शक्तिशाली विदेशी भावों के घात–प्रतिघाट से इन दिनों भारतवासियों का जीवन भयभीत हो गया था। ऐसी परिस्थिति में आत्मरक्षा के लिए अनेक अस्वाभाविक एवं अवांछनीय उपायों का सहारा लेने के लिए भी वे बाध्य हो गये थे। साथ ही साथ बाहरी देशों से भारत के ऊपर बहुत कुछ आरोपित भी हो गया था। उदाहरणार्थ यह कहा जा सकता है कि भारत के अपने धर्म का कोई पृथकता सूचक नाम नहीं रहने पर भी विधर्मियों के भारत आगमन के बाद भी अपनी चिर काल से आचरित प्रथा के अनुसार अपनी पृथक सत्ता को संरक्षण देने एवं उसे और अधिक मर्यादा प्रदान करने के लिए जब वे उन्मुख हुए, तब वेदन से उत्पन्न अति प्राचीन सनातन धर्म को उन लोगों ने हिन्दू धर्म कहा। इसके फलस्वरूप जो भारतवासी अबतक धर्म को धर्म के रूप में ही जानते थे, वे अब से साम्प्रदायिक दृष्टिकोण अपनाकर अपने को हिन्दू और दूसरों को विभिन्न धर्मावलम्बी मानने को विवश हो गए। धर्म का अदलाबन लेकर जो भारतवासी शन्ति के पथ पर अग्रसर होता था, वह अब धर्म को विवाद और पृथकता का एक कारण मानने लगा।
स्वामी विवेकानन्द ईश्वर को तीन गुणों से सम्पन्न मानते हैं। यह तीन गुण हैं–

1. ईश्वर की सर्वव्यापकता,
2. सर्वगुण सम्पन्नता और
3. सर्वमुख सम्पन्नता,

विवेकानन्द के अनुसार इन तीन गुणों के समन्वय से ही आत्मा परमात्मा के साथ एकीकृत हो सकती है।

उद्देश्य

शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में स्वामी विवेकानन्द ने किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। उनका मानना था कि शैक्षिक उद्देश्यों का आधार आध्यात्मिक दृष्टिकोण होना चाहिए क्योंकि शैक्षिक दृष्टिकोण से उद्देश्यों एवं मूल्यों का निर्धारण समाज एवं व्यक्ति के लिए अधिक लाभकारी नहीं हो पाता।

1. स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानन्द के धार्मिक विचारों का अध्ययन करना।
3. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
4. स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

सुझाव

- ''स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।''
- ''स्वामी विवेकानन्द के उद्देश्यों के सन्दर्भ में रामकृष्ण मिशन के कार्यों का मूल्यांकन करना।''
- ''स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन का अन्य भारतीय दार्शनिकों एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के शिक्षा दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन करना।''
- ''स्वामी विवेकानन्द जी की धर्म शिक्षा की सार्थकता का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अध्ययन करना।''

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता, लक्ष्मी नारायण (1992), ''महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री'', कैलाश प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद।
2. गुप्ता, डॉ. एस0पी0 (2002), ''आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. चौबे, डॉ0 सरयू प्रसाद (1986), ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' राम नारायण लाल बेनी माधव, इलाहाबाद।
4. पाण्डेय, डॉ0 राम शकल (2007), ''शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2।
5. पाण्डेय, डॉ0 राम शकल (2004), ''विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।